अघोरपीठ बाबा कीनाराम स्थल, बी-3/335, क्रींकुण्ड, रविन्द्रपुरी, वाराणसी

गुरुवाणी

जो शिक्षक हैं, उनसे मैं आशा करता हूँ कि वो (बच्चों को) ऐसी शिक्षा प्रदान करें, जो बच्चों को मनुष्य बनावें।

–पीठाधीश्वर बाबा सिद्धार्थ गौतम राम जी

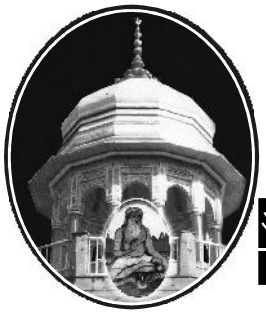

अघोरेश्वर निनाद

अघोरान्नाऽपरो मन्त्रो नास्ति तत्वम् गुरौः परम्।

R.N.I.UPHIN-2000/3008 Postal No-G-2/VSI (E)-04/2016-18

युग-उद्धारक मुनि विज्ञानी। बाबा गौतम औघड़ दानी।।

वर्ष-१६, अंक १०, वाराणसी। सोमवार ३० मई २०१६ ई० सहयोग राशि ४.२५

सिंहस्थ में लहराया अघोरेश्वर सर्वेश्वरी ध्वज

परम पावन पुण्य प्रदायिनी सलिला क्षिप्रा के तट पर उजर खेड़ा (हनुमान मंदिर के पास), उज्जैन में लगभग डेढ़ माह तक (१४ अप्रैल २०१६ से २२ मई २०१६ तक) एक एकड़ के आयताकार क्षेत्र में अघोराचार्य बाबा कीनाराम अघोर शोध एवं सेवा संस्थान के शिविर में लगातार सर्वेश्वरी ध्वज लहराता रहा। परम पूज्य पीठाधीश्वर जी क्रींकुण्ड वाराणसी की प्रेरणा से सम्पूर्ण सिंहस्थ कुंभ काल तक उजरखेड़ा में संस्थान के स्वयंसेवकों द्वारा स्थायी रूप से प्रवास करते हुए प्रतिदिन हजारों आगन्तुकों, श्रद्धालुओं दर्शनार्थियों के सेवार्थ तत्पर रहकर कार्य किया गया। शिविर के सिंह द्वार पर संस्थान का बैनर एवं अघोरेश्वर, परमपूज्य भगवान अवधूत जी एवं पीठाधीश्वर जी का चित्र बरबस ही श्रद्धालुओं के आकर्षण का केन्द्र बना रहा। उक्त शिविर में श्रद्धालुओं द्वारा बड़े ही आसानी से पहुँचा जा सकता था।

शब्द कुंभ से तात्पर्य पात्र से होता है। प्रत्येक मानव शरीर जो दृश्यमान है वह कुंभ ही है। जिसके अन्दर के जल या द्रव के अनुसार कुंभ या घट की महत्ता होती है। कबीरदास जी के अनुसार ब्रह्म एवं जीव का समन्वय निम्न दोहे में किया गया है—

जल में कुंभ, कुंभ में जल है; बाहर भीतर पानी।
फूटा कुंभ जल जल ही समाना यह तत परम गियानी।।

प्राचीन परम्परा के अनुपालन में जो आदि शंकराचार्य जी द्वारा लगभग सातवीं आठवीं शताब्दि में प्रारम्भ किया गया था, देवासुर संग्राम के फलस्वरूप पावन नदियों के किनारे जहाँ अमृत कुम्भ का जल छलका था यानी प्रयाग, उज्जैन, हरिद्वार एवं नासिक में कुंभ के आयोजन की बुनियाद रक्खी गई। क्षीर सागर के मन्थन के फलस्वरूप १४ रत्नों,

श्री, मनि, रंभा, वारुणि, अमिय, शंख, गजराज।
कल्पद्रुम, शशि, धेनु, धनु, धन्वन्तरि, विष, बाज।।

में अमिय यानी अमृत हेतु सुर, असुर संग्राम हुआ था। जो आज भी प्रत्येक व्यक्ति के विचारों में प्रतिदिन होता रहता है। इसी अमृत के प्रभाव से असुर यानी रजोगुण, तमोगुण की निवृत्ति होकर सतोगुण व्याप्त रहता है तथा व्यक्ति धनात्मक सोच से सन्मार्ग की ओर प्रेरित होता है।

मुनि, महर्षि को जो प्राय: तत्समय हिमालय में अथवा एकान्त गुफा, पर्वतों, कन्दराओं में रहकर, मौन व्रत धारण कर तपस्या करते थे, इनकी तपस्या का लाभ जन-जन तक पहुँचाने के लिये, जन-जन को कुंभ द्रव के अमृत्व के सौरभ से व्याप्त करने हेतु इस विशाल पर्व के आयोजन का आशय रहा है। मानव का जल तत्व से नाता "क्षिति, जल, पावक, गगन समीरा" यानी मूल प्रकृति से ही है। मानव में प्राण ऊर्जा से अप्लावित रक्त के एक एक बूँद में जल की मात्रा लगभग ९०% है। यानी जल वास्तव में जीवन है। इस जल का अध्ययन करने पर मानव शरीर के एक-एक इकाई कोशिकायें यानी अणु का स्वभाव उसमें तैरते असंख्य जीवनधारा को प्रभावित करने वाले कारकों यथा क्रोमोजोम, श्वेत रक्त कणिकायें, लाल रक्त कणिकायें, प्लाजमा इत्यादि के स्वभाव के ही अनुरूप पाया गया है। यहाँ तक कि आज का अधुनातन जीवविज्ञान की आधारशिला भी कोशिकाओं के गुण यानी द्रव जाँच ही है। कहने का तात्पर्य यह है कि इसीलिये सदियों से हमारे ऋषि मुनियों ने अथक शोध के पश्चात् समस्त मानव जीवन को सर्वे भवन्तु सुखिन: के अभिप्राय से इन आयोजनों की खोज की है ताकि अनजाने में ही सरल भाव से धर्म के आधार स्तम्भ को मजबूती प्रदान करने हेतु मनुष्य पहले स्वयं सक्षम बलिष्ठ एवं स्वस्थ हो। सर्वविदित है कि क्रमश: चारों कुंभ भारत के विभिन्न पवित्र नदियों के ही किनारे आयोजित होते है। जहाँ एक अवधि विशेष में सम्पूर्ण अखण्ड भारतवर्ष के गाँव-गाँव, कस्बा शहर एवं दूरदराज के स्त्री, पुरुष, बच्चे एकत्र होते है, नदियों के जल में आस्था की डुबकी लगाते हैं तथा भरपूर स्वस्थ सत्संग का लाभ लेते हैं।

इसी क्रम में उज्जैन के उजर खेड़ा में परमपूज्य पीठाधीश्वर बाबा सिद्धार्थ गौतम राम जी के आशीर्वाद से मुम्बई के अघोर भक्तों का अप्रतिम योगदान बना रहा। प्रसाद तैयार करने से लेकर टेन्ट व्यवस्था तक का सफल संचालन उनके द्वारा सम्पन्न किया गया। शिविर के मध्य में पीठाधीश्वर जी का आदमकद कटआउट स्थापित था, जो वृत्ताकार टेन्ट के मध्य में आसन पर अवस्थित था। जो एकदम नजदीक आने पर ही कटआउट का भान कराता था, अन्यथा सशरीर अघोरेश्वर आसन पर विराजमान प्रतीत होते थे। शिविर प्रांगण में ही सर्वेश्वरी ध्वज स्थापित हो, सर्वकल्याण हेतु भविष्य में अधिकाधिक विराटस्वरूप में फहराते रहने एवं सिरमौर्य होने का, आभास करा रहा था। उक्त शिविर सामाजिक ताने बाने में आवश्यक परिवर्तन, परिवर्द्धन कर तनाव मुक्त, विकार मुक्त, सर्वेश्वरी शक्ति से युक्त भावी समाज निर्माण हेतु श्रद्धालुओं को आमंत्रित करता रहा। शिविर प्राचीर से थोड़ा हटकर श्रद्धालुओं के निवास हेतु कई टेन्ट कमरेनुमा एवं हालनुमा बने थे, जिनमें रात्रि विश्राम की समुचित व्यवस्था की गई थी। स्नान एवं स्वच्छ शौचालय की व्यवस्था अति उत्तम ढंग से की गई थी जिससे कुंभ अवधि तक हजारों हजार कुंभ यात्रियों, श्रद्धालुओं ने सिंहस्थ कुंभ में अपने को धन्य बनाया। शिविर में जहाँ एक ओर प्रसाद तैयार करने हेतु मुम्बई के गुप्ता परिवार ने जिम्मेदारी संभाली थी, वहाँ वृत्ताकार अघोरेश्वर आसन के ठीक पीछे श्रीचरण के स्वच्छ एवं शानदार कक्ष के दर्शन से दूर-दूर से आये समस्त श्रद्धालु अभिभूत होते रहे। शिविर के सिंहद्वार पर ही प्रवेश करते बांयी तरफ अघोर चित्र एवं साहित्य स्टाल का संचालन स्वयंसेवी युवा श्री मोनू जी द्वारा बखूबी संभाला जाता रहा। संस्थान के मंत्री श्री उदयभान सिंह के द्वारा दूरभाष से समस्त आगन्तुओं को मार्ग की जानकारी प्रदान की जाती रही जिससे प्रशासन के चुस्त-दुरूस्त इंतजाम एवं रास्तों के रूकावट के कारण कहीं भी किसी भक्त अथवा श्रद्धालु को परेशानी नहीं उठानी पड़ी। कालान्तर में शिविर संचालन हेतु वाराणसी से पधारे वरिष्ठ ब्रह्मनिष्ठ अघोर भक्त श्री श्याम नारायण पाण्डेय जी के द्वारा सतत सावधानी से शिविर का सफल संचालन किया जाता रहा। शिविर के नियमित दिनचर्या के अनुसार प्रात: समग्र रूप से आने वाले सभी भक्तों, दर्शनार्थियों को घुंघनी का नाश्ता एवं चाय पिलायी जाती रही। अघोरेश्वर आसन एवं अघोरेश्वर कक्ष के साफ सफाई एवं सायं प्रात: आरती सम्पन्नता का दायित्व अघोर युवा संत

शेष पृष्ठ दो पर

क्रींकुण्ड (अमोघ-अघोर जल औषधि)

प्रकृति के इस वैभवशाली आँचल में तो न जाने कितने रहस्य भरे पड़े हैं, जिनका आज के इस तकनीकी एवं वैज्ञानिक युग में भी विश्लेषण नहीं हो पाया है, जैसे यमुनोत्री के शिखर पर गर्म पानी का कुंड, बद्रीनाथ धाम में गर्म पानी का कुण्ड, माँ ज्वालादेवी में अनन्तकाल से निकलती ज्वाला आदि आदि। उसी प्रकार काशी के बाबा कीनाराम स्थल का क्रीं-कुंड भी आश्चर्यजनक एवं अबुझ अघोर सागर का ही लघु रूप है। सत्रहवीं शताब्दी में पूरे अखण्ड भारत के भ्रमणोपरान्त अघोराचार्य बाबा कीनाराम जी ने माँ हिंगलाज देवी यानी माँ सर्वेश्वरी के प्रेरणास्वरूप काशी के क्रींकुण्ड स्थल धाम को अपनी तपोसाधना एवं जनपीड़ा हरने की स्थली बनाई। जनश्रुति के अनुसार यह कुण्ड पूर्व में साधारण बावली के रूप में था। साक्षात् शिव के रूप में जनपीड़ा के समूल उद्धारक बाबा कीनाराम जी के समक्ष एक बेसहारा विधवा अपने मृतक बालक के शरीर को लेकर विलाप करती रोती-बिलखती आ पहुँची। स्त्री के हृदय की व्यथा एवं करुण आर्द्र पुकार सुनकर बाबा कीनाराम जी ने इसी बावली में स्नान कराने का कहा फलस्वरूप वह बालक जीवित होकर माता के साथ घर लौटा।

उसी काल से आज तक यह क्रींकुण्ड जो स्थल में आयताकार सरोवर के रूप में भंडार कोण पर अवस्थित है, अपने में अद्भुत रहस्यमय जलराशि यानी अमृत संजोये हुए है। हम भली भाँति अवगत हैं कि क्रीं-कुण्ड स्थल में बाबा कीनाराम जी द्वारा सृजित एक कूप भी है। (जिसे भविष्य के जलापूर्ति हेतु) परम आदरणीय भगवान अवधूत राम जी के द्वारा वर्तमान में प्रयोग हेतु निषेधित किया गया है। उक्त कूप के जल का भी बिना रोकटोक एवं भेदभाव के सैकड़ों वर्षों तक जन सामान्य द्वारा इसका सेवन किया जाता रहा एवं उदर विकार सम्बन्धी समस्त बीमारियों से पूर्णत: अवमुक्त हुआ जाता था। परम पूज्य अघोराचार्य बाबा कीनाराम जी के जन्म स्थान एवं तपोस्थली रामगढ़, जनपद-चंदौली में गोहरे से बना कुँआ जो आज पुराने ईंटों में परिवर्तित प्रतीत होता है, से भी जनसामान्य लाभान्वित हो रहे हैं। उक्त कुँए को रामसरोवर के भी नाम से जाना जाता है। जिसको चारों घाट से चार अलग-अलग गुण, धर्म एवं स्वाद के जल पाया जाता है। इस कूप के चारों घाटों को चारों धाम का पुँज माना जाता है। लोक मान्यता है कि आज भी अघोराचार्य बाबा कीनाराम जी वहाँ हर मंगलवार एवं रविवार के दिन स्नान हेतु उपस्थित रहते हैं। क्रींकुण्ड के चौथे पीठाधीश्वर के रूप में जग विख्यात परम पूज्य बाबा गैबीराम जी की जल व्यवस्था सर्वविदित है। आज भी काशी में चमत्कारिक कूप के रूप में छोटी गैबी, बड़ी गैबी दोनों मोहल्लों में जनसामान्य द्वारा जल का लाभ उठाया जा रहा है।

अघोराचार्य बाबा कीनाराम की कृपा आभा से संयुक्त क्रींकुण्ड का जल आज भी प्रति मंगलवार एवं रविवार को निष्काम भाव से भक्तों द्वारा प्रयुक्त होता है। विधानानुसार महिला, पुरुष एवं बच्चे स्नान के बाद सरोवर के बीच अवस्थित बाबा कीनाराम की प्रतिमा को हृदय से प्रणाम कर अपनी मनोकामना पूर्ण किये जाने की झोली फैलाते हैं। इस कुण्ड में अघोर समानता एवं समवर्तिता के अनुसार समाज के प्रत्येक वर्ग के महिला एवं पुरुष स्नान कर अपने को धन्य बनाते हैं। यानी परोक्ष रूप से आज के युग में भी क्रींकुण्ड स्थल का यह अद्भुत सरोवर जल औषधि के रूप में शताब्दियों से विख्यात है। स्नानोपरान्त न केवल व्यक्ति की शारीरिक एवं मानसिक अवस्था में परिवर्तन होता है, बल्कि उसके पूर्व जन्म के कृत पाप भी कट जाते हैं। प्रथम बार स्नानोपरान्त भींगे वस्त्र को छोड़कर अन्न दान करने का विधान है तथा लगातार पाँच मंगलवार-रविवार स्नान के पश्चात् प्रक्रिया पूर्ण मानी जाती है। कुण्ड पर नर-नारी, बालक-बालिकाओं के छोड़े हुए वस्त्रों को अघोराचार्य बाबा कीनाराम अघोर शोध एवं सेवा संस्थान के स्वयंसेवकों द्वारा सुखाकर कीटाणु रहित कर समाज के जरूरतमंदों में वितरित करने की प्रक्रिया आज भी जारी है। कुण्ड पर स्नानार्थियों की बढ़ती भीड़ को देखते हुए प्रशासन को भी कुण्ड की सफाई एवं भीड़ नियंत्रण हेतु अपेक्षित ध्यान दिया जाना अत्यावश्यक है। जिसका नितान्त अभाव है।

यद्यपि आज के दूषित वातावरण में गंगा जी से आन्तरिक स्रोतों से जुड़ा हुआ यह कुण्ड वर्ष भर जल से भरा रहता है। जिसमें मछलियों एवं कच्छपों द्वारा प्राकृतिक रूप से कुण्ड की सफाई निरन्तर की जाती है। आज के इस सर्वसुलभ फकीरी दुआ की पवित्रता को हमें अक्षुण्ण बनाये रखने हेतु कृत संकल्पित होना पड़ेगा।

C-अघोराचार्य बाबा कीनाराम अघोर शोध एवं सेवा संस्थान् के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक **अरुण कुमार सिंह** द्वारा महादेव प्रेस, बी.3/335, रविन्द्रपुरी कॉलोनी, भेलूपुर, वाराणसी (उ0प्र0) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पादक : चन्द्र नाथ ओझा

ग्राफिक्स : आशीष कुमार बरनवाल

☎ **0542-2277155.**
e-mail–kinaram@rediffmail.com
www.aghorpeeth.org

प्रथम पृष्ठ का शेष

सिंहस्थ में लहराया.....

बाबा आत्माराम जी के जिम्मे था। जिनके साथ अघोर संत सर्वश्री विकास बाबा एवं श्री ज्ञानचन्द जी तथा फैजाबाद के गृहस्थ अघोर भक्त राजेश सिंह के अलावा संस्थान के वाहन-चालक सर्वश्री कैलाश निषाद व सर्वेश जी के योगदान ने श्रद्धालुओं को अभिभूत करने में कोई कमी नहीं रक्खी। इनके अतिरिक्त सर्वश्री अशोक ठाकुर एवं कमलेश जी भी अन्त तक शिविर में बने रहे। प्रात: से लेकर सायं तक आने वाले यात्रियों, श्रद्धालुओं ने शिविर में आकर ससमय प्रसाद ग्रहण कराते रहे एवं नींबू के शरबत हेतु स्वयंसेवकों को आदेश देते रहे।

उज्जैन यानी अवन्तिका नगरी परम प्रतापी राजा विक्रमादित्य, राजा भोज एवं महाकवि कालिदास की कार्यस्थल रही है, यहाँ पर कुंभ का विशेष महत्व है। बारह वर्ष के अन्तराल पर जब बृहस्पति सिंह राशि पर अवस्थित रहता है तो चैत्र मास से वैशाख पूर्णिमा तिथि तक विभिन्न पुण्य तिथियों पर स्नान एवं शाही स्नान का विधान है। जिसे सिंहस्थ कुंभ कहते हैं। उज्जैन नगरी न केवल प्राचीनतम नगरी में गिनी जाती है बल्कि क्षिप्रा में स्नान कर महाकाल जो द्वादश ज्योर्तिलिंग में प्रमुख हैं, के दर्शन को अमोघ फल का दाता माना जाता है। यद्यपि क्षिप्रा नदी का उद्गम मध्य प्रदेश के ही पहाड़ी (नगर महू से २० किमी दूर) से है तथा कम पाट वाली, स्वच्छ जल वाली क्षिप्रा नदी का जल वस्तुत: आज भी प्रदूषण मुक्त है। कहा जाता है कि उज्जैन में ही द्वापर में श्रीकृष्ण, बलराम के साथ सुदामा ने यहीं पर गुरु संदीपनी से शिक्षा प्राप्त किये थे। महाराज विक्रमादित्य, महाराज भर्तृहरि के कनिष्ठ भ्राता थे, जिनके नाम पर विक्रमी संवत आज भी लागू है। उज्जैन के मंदिरों में महाकालेश्वर के अलावा हरसिद्धि देवी, बड़े गणेश, गोपाल मंदिर, श्री चिन्तामणि गणेश, श्री गढ़कालिका देवी मंदिर, श्री कालभैरव, श्री चारधाम मंदिर, मंगलनाथ मंदिरों के अलावा श्री संदीपनी आश्रम, प्रशान्ति धाम तथा इस्कान मंदिर दर्शनीय स्थल हैं। उज्जैन से लगभग १६५ किमी की दूरी पर द्वादशज्योर्तिलिंग में वर्णित ओंकारेश्वर एवं ममलेश्वर का प्राचीन मंदिर भी नर्मदा नदी के किनारे है जो मध्य प्रदेश के खंडवा जनपद में पड़ता है। अधिकतर सनातनधर्मी महाकालेश्वर के दर्शनोपरान्त यहाँ पर जाकर अपने मनोरथ पूर्णता हेतु दर्शन पूजन कर धन्य होते हैं। उज्जैन के राम घाट पर बड़े ही सुव्यवस्थित ढंग से सभी स्नानों की सम्पन्नता यानी शाही स्नान, साधु संतों, महात्माओं के साथ नागा साधुओं द्वारा भी की गयी। आज के युग में भी भारतवर्ष की पुरातन परम्परा का अक्षरश: पालन करने को उद्यत नागा साधुओं की जमात अपने लाव लश्कर भभूत लपेटे हुए झुंड अलग अलग हाथी घोड़ों के साथ सलिला क्षिप्रा में विभिन्न तिथियों में शाही स्नान को प्रस्थान कर रहे थे, तो न केवल प्रशासन सतर्क था बल्कि विदेशी सैलानियों के कैमरे फ्लैश करते रहे एवं उनके कौतुहल

शेष पृष्ठ तीन पर

गुरु पूर्णिमा महोत्सव, वर्ष 2016

धर्म बन्धुओं,

अपार हर्ष के साथ सूचित किया जा रहा है कि 'गुरु शिष्य परम्परा' का पवित्र पर्व **'गुरु पूर्णिमा महोत्सव'** अघोर गुरुपीठ अघोराचार्य महाराजश्री बाबा कीनाराम स्थल, क्रीं कुण्ड, रविन्द्रपुरी (शिवाला), वाराणसी में **दिनांक 19 जुलाई 2016 ई0, दिन मंगलवार** को परम्परागत ढंग से ससमारोहपूर्वक मनाया जायेगा।

इस पुनीत अवसर पर आप सभी सादर आमंत्रित हैं।

–: कार्यक्रम :–

1. प्रातःकालीन आरती के बाद श्रमदान एवं सफाई कार्य तथा प्रभात फेरी।
2. प्रातः 8 बजे से पूज्य पीठाधीश्वर जी द्वारा पूजन, अर्चन।
3. प्रातः 9.30 बजे से श्रद्धालुओं द्वारा पूज्य पीठाधीश्वर जी का दर्शन-पूजन।
4. दोपहर 12 बजे से प्रसाद वितरण का कार्यक्रम।
5. सायंकाल 4 बजे से गोष्ठी एवं पूज्य पीठाधीश्वर जी का आशीर्वचन।
6. सायंकाल आरती 7.30 बजे से प्रारम्भ।
7. रात्रि 8 बजे से सांस्कृतिक आयोजन।

सिंहस्थ में लहराया अघोरेश्वर सर्वेश्वरी ध्वज

द्वितीय पृष्ठ का शेष

का पारावार न था। यद्यपि विधर्मियों से शक्ति प्रदर्शन कर अपने धर्म ध्वजा को कभी धूमिल न देने हेतु, प्राणोत्सर्ग करने तक को उद्यत इन नागा त्रिशूल, चिमटा, शस्त्रधारी साधुओं की फौज की स्थापना की गयी थी, जो अपने घर परिवार से पूर्णत: अलग होकर तपस्वी जीवन व्यतीत करते हुए आज भी समाज से अलग-थलग रहते है। ये प्रभु स्मरण में लीन रहते हैं तथा इनके आने एवं जाने के मार्ग का भी जनसाधारण एवं आम जनता को पता नहीं चलता। नागा साधुओं का जखेड़ा उज्जैन सिंहस्थ का पहचान बन गया था। कुंभ का दृश्य उज्जैन नगरी में अद्वितीय था। हजारों हजार पंडालों में चौबीस घंटे कीर्तन, प्रवचन के साथ सद्साहित्य बिक्री एवं वितरण अद्भुत नजारा प्रस्तुत कर रहा था। प्राचीन संत परम्परा से लेकर नये इन्वायरमेंट बाबा तक का पण्डाल लगा था। यद्यपि यह स्वाभाविक ही है कि जहाँ गुलाब के फूल होते हैं वहीं काँटों का भी स्थान होता है। अनादिकाल से असली संतों के सदृश्य ही नकली संतों की भी उपस्थिति अनिवार्य होती आ रही है जैसे फसलों के साथ ही खर-पतवार भी उसी खेत में पैदा हो जाते हैं। उसी प्रकार उज्जैन के कुंभ में भी अलौकिक संतों के मध्य कुछ वेशधारी संत भी अपने-अपने स्थान पर विराजते दृश्यमान थे, परन्तु नागा साधुओं का समूह सदा समाज से एक दूरी बनाकर आज भी अपने में रत रहते है तथा आठवीं शताब्दी से लेकर आठरहवीं शताब्दी तक आज भी भारतवर्ष में इनके लगभग १४ अखाड़े मान्यता प्राप्त है जिनमें हजारों की संख्या में नागा साधुओं का जखेड़ा है जिसमें एक तिहाई से अधिक दिगम्बर या नागा वेश यानी वस्त्रविहीन साधु तपस्यारत रहते हैं।

यह सर्वविदित ही है कि हमारी पृथ्वी रूपी ग्रह पर एक तिहाई ही भूभाग है तथा शेष दो तिहाई जल ही जल है। यानी इस कुंभ रूपी शरीर का जल से अनोन्याश्रित सम्बन्ध है। जल रूपी ऊर्जा की विशालता में जब हम डुबकी लगाते हैं, तथा मन में पाप कटने की आस्था बनी रहती है तो आश्चर्यजनक परिवर्तन स्वरूप हमारे व्यक्तित्व में निखार आना प्रारम्भ हो जाता है। हमारी श्रद्धा, विश्वास हमें एक आत्मविश्वास से परिपूर्ण कर देता है तथा अनजाने में ही हम सुगम मार्ग के पथिक हो जाते हैं। इसीलिये आज भी घोर प्रदूषण के बावजूद गंगा के साथ अन्य पौराणिक एवं वर्तमान में विराजमान नदियों का महत्व बढ़ता ही जारहा है। यहाँ तक कि भारत सरकार को जनआकांक्षा को दृष्टिगत रखते हुए एक अलग से जल-संसाधन एवं गंगा निर्मलीकरण के मंत्रालय का गठन करना पड़ा है। अत: अन्दर बाहर जल की निर्मलता अपरिहार्य आवश्यकता है। यदि हमारा कुंभ रूपी शरीर अमृत मय जल से आप्लावित बना रहेगा तो प्राकृतिक रूप से विषाणुओं के प्रवेश से शत प्रतिशत वंचित रहेगा, यानी परनिंदा, द्वेष, दुराचरण, अन्याय, लोभ, अहंकार आदि आदि दुर्गुणों की मात्रा नगण्य होते होते क्रमश: तिरोहित हो जायेगी तथा हम आसानी से अघोर की ओर अग्रसर होते जायेंगे, जहाँ शान्ति एवं आनन्द के हम साक्षी बनेंगे। जहाँ संकीर्णता के स्थान पर उदारता, निंदा के स्थान पर प्रशंसा लोभ के स्थान पर निर्विकारिता, निर्लोभता का सहृदय हम वरण करते जायेंगे। हमारी दैनन्दिनी सुविकसित होकर हमें सन्मार्ग के सोपान पर प्रशस्त करती रहेगी तथा मानव योनि सफल सिद्ध होगी, बशर्ते कि हम मन, कर्म, वाणी, विचार से गुरु वाणी पर चले एवं गुरुचरण का ध्यान करते रहें। यह तथ्यात्मक रूप से सिद्ध है कि कई जन्मों के संचित पुण्य के फलस्वरूप ही सद्गुरु का दर्शन एवं संकेत मिलता है। श्रद्धालु शिष्य के लिये बहुत बड़ा विद्वान अथवा वक्त होना जरा भी आवश्यक नहीं है, यदि उस पर गुरु कृपा है तो उसकी श्रद्धा गुरुचरण में निरन्तर अटूट बढ़ती जाती है उसका विश्वास अडिग है तो वही वास्तव में गुरु के सन्निकट है। सद्गुरु अपने हजारों भुजाओं एवं नेत्रों से सदैव ही उसकी रक्षा करते हुए उसके जीवन की देखभाल करने हेतु उद्यत रहे हैं। उसे गुरुवाणी की चर्चा, सुहावनी लगने लगती है उसके अभ्यन्तर में कभी दुराशा या निराशा टिक ही नहीं सकती, यदि संयोग से कोई विकार क्षण मात्र के लिये आ भी जाता है तो उसके तुरन्त छूमंतर होते देर भी नहीं लगती मानव के निर्मलता में कोई दोष न रह जाये। इस हेतु गुरु की दृष्टि शिष्य के व्यक्तित्व को संवारने में लगी रहती हैं। यानी—

गुरु कुम्हार शिष्य कुंभ है गढ़ गढ़ काढ़े खोट।
नीचे हाथ सहायै दे ऊपर मारे चोट।।

इस प्रकार सलिला क्षिप्रा के तट पर सर्वेश्वरी ध्वज के फहराते, लहराते रहने से दोनों वक्त घड़ी-घंटी-आरती होने से आसपास के वातावरण में भी शुद्धता, शान्ति का संचार होता रहा जो भी सम्पर्क में आया, उसके नकारात्मक विचार दुर्गुण भाव तिरोहित हुए। इसके साथ ही सिंहस्थ कुंभ नगरी के विविध पण्डालों की शोभा, सजावट, प्रवचन, सत्संग, भक्तों की अपने-अपने सद्गुरु के प्रति अटूट निष्ठा, भारतवर्ष के भावी उज्जवल भविष्य का द्योतक बना।

सिंहस्थ कुंभ नगरी में समस्त दर्शनार्थियों को भरपूर लाभ मिला, यहाँ तक कि प्रशासन के चुस्त, दुरुस्त व्यवस्था के बावजूद-लापरवाह लोगों को भी चोरों, उचक्कों ने भविष्य हेतु सावधान किया। अधुनातन वातावरण में जी रहे, प्रदूषण से युक्त, प्राकृतिक नियमों के विपरीत जीवन यापन करते लोगों को भी अपने जीवन शैली में परिवर्तन करने हेतु सोचने को बाध्य होना पड़ा।

सिंहस्थ कुंभ के अन्तिम स्नान दिनांक २१/२२ मई २०१६ के दिन सर्वेश्वरी ध्वज को विधानानुसार उतारा गया तथा कुंभ की अवधि में लिये गये व्रतों को यादगार रूप में संजोकर जीवन यापन करने का व्रत लिया गया।

सद्चरित्र से जीवन की सार्थकर्ता

पृष्ठ चार का शेष

खच्चर मचाते हैं। ऐसा करने वाले चाहे हिन्दू हो, मुसलमान हो या सिख, क्या यही उनका धर्म है?

यदि आप किसी के सामने दसों उंगली जोड़ कर खड़े हो जाते हैं, प्रणाम करते हैं तो वह आपसे भी अधिक विनम्र होकर प्रणाम करता है। यह आपका व्यावहारिक पक्ष है और इसका तत्काल प्रभाव होता हैं यदि आप एक ऊंगली दिखाकर किसी की बुराई करते हैं तो आपकी ही तीन अंगुलियाँ स्वयं आपकी ओर मुड़ जाती हैं। जब हम किसी को गाली या अपमान जनक शब्द कहते हैं तो कहने के पूर्व ही हमार वाणी, मन, मस्तिष्क कितना दूषित हो जाता है, यह आप अनुभव किये होंगे।

अनुमान ज्ञान से परमात्मा, ईश्वर सभी का प्रादुर्भाव होता है। कब आप इन्द्रियों को संयमी बनायेंगे? आप कोई भजन, पूजन, धर्म न करें, पर इतना तो करे कि अपने घर-परिवार, बन्धु-बान्धव से भय न खायें, ईर्ष्या, द्वेष न रखें। इन भावनाओं को अंगीकार कर देखें, आप ईश्वर के तुल्य हो जाते हैं। आप मिट्टी छुयेंगे तो सोना के समान हो जायेगा, नहीं तो सोना भी छुयेंगे तो मिट्टी हो जायेगा। हम आशा करते है कि हम निर्भयता, चरित्र और सदाचार पर निर्भर करेंगे। हिन्दू, मुसलमान, ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि बनने का परित्याग करेंगे। यह बड़ा ही दु:ख का घर है। हम मनुष्य बनें, हमें सुख, शान्ति विश्राम मिलेगा।

दम्भ से छूट जाते हैं दैवी गुण

अघोरेश्वर महाप्रभु बाबा भगवान रामजी का आशीर्वचन

मुड़िया साधुओं!

जो पहले जाना वह गुरु, जो बाद में जाना वह शिष्य। गुरु, शिष्य में यही अन्तर है। गुरु प्राचीन उत्तम वस्तु है। गुरुपीठ की स्थापना किसी भी वस्तु में या मनुष्य में करके साधना करने से फलीभूत होती है। गुरुपीठ की स्थापना के लिए किसी जाति विशेष या वर्ग विशेष की आवश्यकता नहीं। चाण्डाल हो या ब्राह्मण, पतीर हो या पशु-पक्षी किसी में भी गुरुपीठ स्थापित किया जा सकता है। विश्वास एवं श्रद्धा होनी चाहिये। भगवान दत्तात्रेय के चौबीस गुरु थे। पक्षियों तक में उन्होंने गुरुपीठ की स्थापना की थी। गुरु द्वारा बताये मन्त्र एवं शब्द को श्रद्धा से धारण कर विश्वासपूर्वक क्रिया करने से लाभ होता है। विश्वास बहुत बड़ी वस्तु है। आप अपना विश्वास दूसरों को दें। विश्वासी बने। दम्भ होने से गुण छूट जाता है। दम्भ सताता व जलाता है। अपने को धोखा न दें। दम्भ रहते दैवी गुण नहीं, दु:सह भावनाएँ ही मिलेगी। रैदास चर्मकार थे। उनकी शिष्या मीरा थी। कबीर के शिष्य हिन्दू थे। बनावटी न बने। अस्वस्थ न हो। पवित्र हृदय से जो करेंगे वह लाभ देगा। स्नेह, विश्वास, श्रद्धा के बिना मन्त्र, क्रिया, औषधि फलवती न होगी।

धर्म, गुरु आदि पर परामर्श एवं मनन हुआ है। बहुत से सज्जन अभी भी बहुत दूर हैं। यहाँ आकर भी आनन्द न पा सके हैं। क्रम से कम जब तक आप यहाँ हैं तब तक के लिए गृह प्रापंचिक बातों का ख्याल छोड़ दें। यहाँ आकर भी घर परिवार और सांसारिक वस्तुओं के चिन्तन में रहेंगे तो यहाँ आने से कोई लाभ नहीं। मधुबन के भौंरे और गोबरौंरे की शक्ल-सूरत एक जैसी होती है। परन्तु दोनों के गुण क्रिया-कलाप भिन्न होते हैं। ***शेष अगलें अंक में***

सद्चरित्र से जीवन की सार्थकर्ता

अघोरेश्वर महाप्रभु बाबा भगवान रामजी का आशीर्वचन

मुड़िया साधुओं!

सारे विचारों के अन्तरंग में एक विचार है और वह मनुष्य बनने का। हम अनेक सांस्कृतिक-विचारधाराओं वाले देश मे रहते हैं। हमारे देश में अनेकों तरह के धर्म है। सर्वेश्वरी-समूह की तरफ से हमें सभी धर्मों की जो अच्छाई है, उसका आदर करने की एक आदत सी बन गयी है और साथ ही उस धर्म को हम अच्छा नहीं समझते जो मनुष्य के प्रति ईर्ष्या, द्वेष और घृणा पहुँचाता है और अनेकों जातियों में विभिन्नता पैदा करता है। इसलिये हमारा ध्येय यही है कि न हम ब्राह्मण बने, न क्षत्रिय, न हिन्दू, न मुसलमान, न ईसाई, हम इन सबको छोड़कर सिर्फ मनुष्य बनें। यदि हम क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, नेता, साधु, पंडित बनते हैं तो वह इतना महत्व का नहीं जितना कि मनुष्य बनना।

हम अपने जीवन में मनुष्य बनें। ईसा, बुद्ध, मुहम्मद, राम, कृष्ण हमारे और आपकी तरह ग्राम-नगर में पैदा हुए पर वे मनुष्य बनें, मनुष्य के गुणो को अंगीकार किये। हम देवताओं के उन गुणों को नहीं समझते जिनसे वे बने हैं। जैसे मनुष्य का शरीर क्षिति, जल, पावक, गगन, समीर से बना है, वैसे ही देवता परोक्ष में मैत्री, दया, करुणा, सहनशीलता आदि गुणों से बने हैं। भगवान् ईश्वर या देवी का कोई और विग्रह नहीं है, जिन मनुष्यों के पास यह (मैत्री, दया, करुणा, सहनशीलता इत्यादि) पाया जाता है, उसे ही हम देवता, ईश्वर, भगवान कहते हैं।

हमारे हिन्दू धर्म के बड़े-बड़े उपदेशक, गीता, रामायण से उपदेश करते हैं उसी प्रकार मुसलमान कुरान से और ईसाई बाइबिल से उपदेश करते हैं। पर वह अपना धर्म नहीं हो सकता क्योंकि जो अपार है, उसे कोई पार नहीं कर सकता। जो अपार, असीम है उसे कोई सीमा में बांधने का प्रयास करे तो हम, आप या कोई, मानने के लिए तैयार नहीं होंगे जो समय, देश-काल बीत रहा है, इसमें जो वैद्य होते हैं, व्याधि निवारण के लिये हम उनको बुलाते हैं, न कि सुखेन को समय, देश-काल के जो राजा, वैद्य और गुरु है, वही पूज्यनीय, ग्रहणीय और अंगीकार करने के लायक है। इसी तरह से आपके समय का जो महान व्यक्ति है वही दिशा-निर्देश कर सकता है और उसी से आप विगत-ज्वर (मुक्ति पाना) हो सकते है। पर हमारे मन में तो बहुत दिनों का जो विचार पड़ा हुआ है, हम सोचते हैं कि वही आचार-विचार अंगीकार करना चाहिये, इसी से अनेक उलझनें, परेशानियाँ और कठिनाइयाँ आ पड़ती है।

तिलक, दहेज, शादी-विवाह, जाति-पांति की बातें आप बहुतों से सुने होंगे। आप यह भी सुने होंगे कि हमें धन, सुन्दरता और सम्मान चाहिये तो सोचिये धन की इच्छा करते हैं दरिद्र, सुन्दरता की इच्छा करता है कुरूप और सम्मान की इच्छा करता है वह जो निरादर रहता है। क्या हम उस परिस्थिति में हो गये हैं? यदि हम चरित्र, व्यक्तित्व सच्चाई के धनी हैं, समाज में यदि हम सिर ऊँचा रखते हें तो इस तरह की इच्छा हमें कितना दुर्बल बना सकती है।

इसी निमित्त तिलक, दहेज आदि की दुर्बलता हममें प्रवेश कर गयी है और इसी कारण हजारों कामनायें, इच्छायें हममें उत्पन्न और विलीन होती रहती हैं। इसकी पूर्ति शायद ही कभी होती है जो मनुष्य बने होते हैं। जो महापुरुष हैं वे संकल्प करते हैं। पर जिनमें मनुष्यता के गुण नहीं है, जो मनुष्य बने ही नहीं, वे तो दुर्बल मनुष्यों की तरह इच्छा करते रहते हैं जो कभी पूरी नहीं होती, विस्फोट करती रहती है, मन को दूषित बनाये रखती है और चित्त व्याकुल हुआ रहता है। जिस चित्त में समाधि का सुख और आनन्द उत्पन्न होता है, उनमें वह चित्त की अवस्था नहीं रह जाती कि वह सुख हो सके।

गुरु कहते हैं मार्ग, रास्ता को, उस रास्ते में जब हम जीवन में कुछ चल लेते हैं तो फिर चलने का समय आता है तो बहुत ही अच्छा, सुगम, शान्ति, आह्लाद होता है और फिर चलने की चेष्टा करते हैं सालों-साल। उस मार्ग पर जब हम चलने के लिये तैयार रहते हैं तो हमारा जीवन जो २६ या २७ हजार दिनों का गिना हुआ है। (७० से ७५ वर्ष के जीवन में) यदि वह किसी कटुता, किसी प्रकार की व्यथा से व्यथित नहीं है, तो स्वच्छ और निर्भय होता है और वही जीवन सार्थक है। पर हम इतने भय से ग्रसित हैं अपने बन्धु-बान्धव, कुटुम्ब परिवार से ही, समाज और देश की बात तो अलग रही। हम कोई गलती न करें, आसक्ति न हो तो भय होता ही नहीं। हमारी गलती भ्रम पैदा करती है, ईर्ष्या, घृणा, द्वेष उकसाती है और सारी शक्ति क्षीण हो जाती है। ग्राम नगर के लोग बड़े अपकृति की दृष्टि से देखते हैं। हमारी प्रशासनिक व्यवस्था सुचारू रूप से न होने के कारण प्रतिभाशाली एवं देश के प्रति निष्ठावान तथा चरित्रवान लोग उपेक्षित हैं और अक्षम लोग किसी प्रकार डिग्री लेकर या पैरवी के माध्यम से पहुँचकर प्रशासन संभाल रहे हैं। हमारे देश का सबसे बड़ा प्रशासन का केन्द्र है दिल्ली, जहाँ के कोष में से चरित्र शब्द ही हटा दिया गया है। शायद उसकी उधर कोई आवश्यकता नहीं है। राम ने लक्ष्मण को इसी के लिये रावण के पास भेजा, जो मृत्यु के मुख में था। रावण ने लक्ष्मण से कहा कि "विजय-श्री जो आज तुम्हारे भाई का चरण-चुम्बन कर रही है, वह सिर्फ चरित्र के कारण ही है, नहीं तो राम मुझसे उच्च कुल के नहीं है। उनके पास मेरी जैसी विद्वता और सैन्य बल नहीं है। वह घर से निकाले हुए हैं, फिर भी विजयश्री ने उनका आलिंगन किया और मैं दुर्दिन देख रहा हूँ, क्योंकि मेरे पास चरित्र नहीं है।

जिनका व्यापार ही एक दूसरे में ईर्ष्या, द्वेष, घृणा पैदा करना है, उनसे विलग रहना ही श्रेयस्कर है। ऐसे लोगों में इंसान के रूप में शैतान रहता है। शैतान की कोई अलग शक्ल नहीं होती। शैतान की बातें इतनी अच्छी होती हैं कि वह मंत्र मुग्ध कर देता है। इंसान उतनी बातें और वाक् चतुरता कहाँ पायेगा? वह तो सच कहता है और सच एक ऐसी चीज है जिसकी ज्यादा व्यापकता नहीं है। अविद्या की व्यापकता है जिसके बारे में तुलसीदास जी ने कहा है कि "विधि प्रपंच गुन औगुन साना।" विद्या बहुत थोड़े होती है। सत्य ही नित्य, नवीन होता है। इसके सहारे कुछ लोग देश का आचरण नष्ट करने में लगे हैं। इसमें बहुत से नेता और साधु भी लगे हैं कि नौजवान चरित्र भ्रष्ट और अनैतिक हो जायेंगे, इनकी शक्ति क्षीण हो जायेगी, दिन-रात, भोग-विलास, लोलुपता में लिप्त रहेंगे तो धर्म-कर्म की कुछ आवश्यकता पड़ेगी और हमारे पास आयेंगे।

जिस मिट्टी में हम पले और खेले हैं। उसमें इस प्रकार ईर्ष्या, द्वेष, वैमनस्यता फैला दी गयी है कि लोगों की नींदे हराम हो गयीं। इस तरह की आसुरी मनोवृत्ति के लोग हैं और वे यहाँ के महापुरुष माने जाते हैं। एक दूसरे में घृणा, ईर्ष्या, द्वेष फैलाकर क्या लाभ उठाते हैं? जब हम सोचते हैं कि कैसे इस दु:ख से छुटकारा हो तो आंसू ही पोंछना रहता है। जिस देश में हम रहते हैं, जिस खपरैल और फूस के मकान में हम खेले और पले उसे कभी भूलना नहीं चाहिये, भले ही हमारा कितना ही अच्छा साधन-सम्पन्न आवास हो जाये, क्योंकि हमारे देश में बहुतेरे लोग उसी परिस्थिति में है।

सिर्फ आश्वासन से कुछ होने वाला नहीं है। हम मनुष्य बनकर निर्भयता प्राप्त करें। परमात्मा से प्रार्थना करके घृणा, ईर्ष्या, द्वेष का परित्याग करें और अपनी आत्मा को पद्लित होने से बचावे। कोई दुश्मन होकर आता है तो उसका प्रातिकार हम कर सकते हैं पर मित्र होकर जो दुश्मन रहता है, हम कैसे उसका प्रतिकार कर सकते हैं? जो मित्र भी हैं, बहुत बड़ा दुश्मन भी है, उसे पहचानें। हम उसे यदि नहीं समझ पायेंगे तो हमारी जो आत्मा है, जिसमें सभी कुछ है और जिसके संकल्प से सभी कुछ होने वाला है, उसकी तन्मयता को नहीं प्राप्त कर सकते।

आप लोग प्रेम के बारे में बातें करते हैं। प्रेम तो वह है जिसे आप भगवान्, भगवती कहते हैं। उसके यहाँ तक खींच लाने की एक सवारी है। इसीलिये किसी संत ने कहा है—

पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ, पंडित हुआ न कोय।
ढाई आखर प्रेम का, पढै सो पंडित होय।।

जिसे इसकी (प्रेम की) जानकारी हुई, जिसने इसे पढ़ा वह पण्डित है, और वही प्रेम, स्नेह भावना से सबके साथ उठता-बैठता, जीता, जागता और रहता है। वही यह तय करता है कि—

भजन-तजन के मध्य में हम करें विश्राम।
हमरी भजन राम करें और हम करें आराम।।

न हम भजें न तजें। उस विचारधारा को अंगीकार करें, जिससे हमारे मन, मस्तिष्क, हृदय में जो नित्य नवीन सत्य है, वही सही प्राप्त हो।

धर्म में प्रेम, करुणा, दया, सहनशीलता होती है। धर्म की भावना से परिपूरित मनुष्य एक दूसरे के खून का प्यासा नहीं होता। जो ऐसा करता है, वह धर्म से बहुत दूर है। हम देखते हैं, एक ही गुरु के चेले, एक ही देश के रहने वाले आपस में खून-

शेष पृष्ठ तीन पर

अघोर सूत्र

- **अपने लिये जो फूट और वैर बेचता है वह अपने साथ विश्वासघात करता है।**
- **जब व्यक्ति असंतुलित है तो उसका तीर्थ, पूजा-पाठ सब व्यर्थ है।**
- **मैं वही देखता हूँ जो आप मुझे देखने देते हैं।**

अघोरेश्वर महाप्रभु बाबा भगवान रामजी